











# सम्पादकीय

## हरियाणा चुनाव के बाबा कांग्रेस और इंडिया ब्लॉ

हरियाणा चुनाव में कांग्रेस को मिली अप्रत्याशित हार के कई तरह विश्लेषण किए जा रहे हैं। कांग्रेस की आंतरिक गुटबाजी, आलाकमान निदेशों की परवाह न करके क्षत्रियों का मनमाना रखेंवा, भाजपा की रणनीति को समझने में चूक, दलित और जाट वोट बैंक का साथ न मिलना। इन सबके साथ एक अहम कारण ईडिया गठबंधन के दलों को साथ लेकर चलने को भी कांग्रेस की हार का कारण बताया जा रहा है। कांग्रेस पर अहंकारी होने के आरोप कई विश्लेषक लगा रहे हैं। वैसे अगर परिवर्तन एकिजट पोल के मुताबिक ही आते तो शायद इस तरह विश्लेषण में परिवर्तन मारने की कला नहीं देखी जाती। क्योंकि स्वतंत्र पत्रकारिता करने वाले यूट्यूब चैनलों के पत्रकार ही नहीं, सरकार समर्थक माने जाने वाले नहीं चैनलों के एकिजट पोल में भी कांग्रेस की जीत के अनुमान लग रहे हैं। कांग्रेस तो अब भी यही मानती है कि ईवीएम में कोई गड़बड़ी की गई। इसलिए उसे कई सीटों पर हार का सामना करना पड़ा। इस बात शिकायत निर्वाचन आयोग से भी कांग्रेस ने की है, और नतीजों अस्वीकार्य करार दिया है। निर्वाचन आयोग ने कांग्रेस के आरोपों खारिज कर दिया है और गड़बड़ी की बात नहीं मानी है, लेकिन फिर शिकायत दर्ज हुई है, तो उस पर क्या कार्रवाई आयोग करता है, देखना होगा। हालांकि कांग्रेस के प्रदर्शन का विश्लेषण किया जाए औंकड़े दर्शाते हैं कि पार्टी की स्थिति में उत्तरोत्तर सुधार ही हुआ। 2014 में कांग्रेस को केवल 15 सीटें मिली थीं और वोट शेयर 20.2% प्रतिशत था, वहीं 2019 में 16 सीटें बढ़ीं और कांग्रेस 31 के आंकड़े पर पहुंची, तब वोट शेयर 28.08 प्रतिशत रहा और इस बार के चुनाव में कांग्रेस की छह सीटें बढ़ीं तो उसे 37 सीटें पर जीत मिली और बार वोट शेयर 39.09 रहा। अर्थात् कांग्रेस के वोट शेयर में 11.2% प्रतिशत का उछाल आया। इन आंकड़ों को देखकर कहा जा सकत कि कांग्रेस की रणनीति तो शायद सही रही लेकिन उसे जमीन पर उतारा का जो काम स्थानीय कांग्रेस नेताओं को करना चाहिए था, उसमें नाकाम रहे। बहरहाल, नाकामी मिली है तो ठीकरा किसी न किसी सिर फूटना है। ऐसे में कांग्रेस विरोधी लोगों को फिर राहुल गांधी ही नहीं आ रहे हैं कि उनकी नेतृत्व क्षमता पर संदेह खड़ा करने का मामला बनाया जाए। इसमें खुद प्रधानमंत्री मोदी भी पीछे नहीं हैं। हरियाणा जीत को उन्होंने सीधे भारत के खिलाफ किसी संभावित अंतरराष्ट्रीय साजिश के फिल होने से जोड़ दिया। उन्होंने पूरी जिम्मेदारी लेते कहा कि कांग्रेस ऐसी साजिशों के साथ है, लेकिन हरियाणा की जीत ने उसे जवाब दे दिया है। हालांकि ऐसा कहते हुए श्री मोदी यह भूल नहीं कि जमू-कश्मीर की जनता ने कांग्रेस और नेकां गठबंधन पर मुहर लगाया है। नरेन्द्र मोदी ने तो कांग्रेस पर विभाजनकारी खेल करने का आरोप लगाया, साथ ही उसे परजीवी बताते हुए उसके सहयोगियों को आरोप किया कि कांग्रेस उनका लाभ ले लेगी और उन्हें खत्म कर देगी। बयानों को सुनकर यह समझ आता है कि राहुल गांधी की अमेरिका यात्रा के बक्त जिस तरह उन्हें धैर्य की कोशिश भाजपा ने की, हरियाणा नतीजों के बाद वो कोशिशें थोड़ा और जोर पकड़ रही हैं।



दीपमालिकाओं से दुल्हन की तरह सजाया जाता है। इसके साथ शहर में लोग टार्च लाइट के संग नृत्य और संगीत की शोभायात्रा का आनंद लेते हैं। पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं। इस दौरान यहां आगंतुकों का स्वागत पारम्परिक मिठाई और उपहारों से किया जाता है। यहां भी रावण-दहन के आयोजन होते हैं व मैटानों में मैले

लगते हैं। हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भाँति यहां भी दस दिन अथवा एक सप्ताह पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है। स्त्रियां और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से सज्जित होकर ढोल, नगाड़े, बांसुरी आदि वाद्य यंत्रों को लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूम धाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में प्रशिक्षित नरतक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा करते हैं और कुल्लू नगर में देवता रघुनाथजी की वंदना से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराळी होती है।

दुर्गा को समर्पित रहते हैं जबविं  
दसवें दिन ज्ञान की देवी सरस्वत  
की वंदना की जाती है। इस दि-  
विद्यालय जाने वाले बच्चे अपन  
पढ़ाइ में आशीर्वाद पाने के लिए म  
सरस्वती के तांत्रिक चिह्नों की पूजा  
करते हैं। किसी भी चीज को प्रारंभ  
करने के लिए खासकर विवर  
आरंभ करने के लिए यह दि-  
काफी शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र  
के लोग इस दिन विवाह, गृह-  
प्रवेश एवं नये घर खरीदने का शुभ  
मुहूर्त समझते हैं। महाराष्ट्र में इ  
अवसर पर सिलंगण के नाम से  
सामाजिक महोत्सव के रूप में उ  
इसको मनाया जाता है।

बस्तर में दशहरे के मुख्य कारण  
को राम की रावण पर विजय न  
मानकर लोग इसे मां दत्तेश्वरी क  
आराधना को समर्पित एक प्र  
मानते हैं। दत्तेश्वरी माता बस्त  
अंचल के निवासियों की आराधन  
देवी हैं जो दुर्गा का ही रूप हैं। यह  
यह पर्व पूरे 75 दिन चलता है और  
यहाँ दशहरा श्रावण मास के  
अमावस्या से आश्विन मास के  
शुक्ल त्रयोदशी तक चलता है।  
बस्तर में यह समारोह लगभग  
15वीं शताब्दी से शुरू हुआ था।  
इसका समापन अश्विन शुक्ल  
त्रयोदशी को ओहाड़ी पर्व से होता  
है।

है। गरबा नृत्य इस पर्व की शान है पुरुष एवं स्त्रियां दो छोटे रंगीन डंडों को संगीत की लय पर आपस में बजाते हुए धूम धूम कर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर भक्ति, फिल्म तथा पारम्परिक लोक-संगीत सभी का समायोजन होता है। पूजा और आरती के बाद डाँडिया रास का आयोजन पूरी रात होता रहता है। नवरात्रि में सोने और गहनों की खरीद को शुभ माना जाता है।

बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में ही मनाया जाता है। यह बंगालियों, ओडिया, और आसमिया लोगों का

सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। बंगाल में दशहरा पूरे पांच दिनों के लिए मनाया जाता है। औडिशा और असम में चार दिन तक त्योहार चलता है। यहां देवी दुर्गा को भव्य सुशोभित पंडालों में विराजमान करते हैं। देश के नामी कलाकारों को बुलावा कर दुर्गा की मूर्ति तैयार करवाई जाती है। इसके साथ अन्य देवी द्वेषताओं की भी कई मूर्तियां बनाई जाती हैं। यहां दशमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। प्रसाद चढ़ाया जाता है और प्रसाद वितरण किया जाता है। पुरुष आपस में आलिंगन करते हैं जिसके कोलाकुली कहते हैं। स्त्रियां देवी के माथे पर सिंदूर चढ़ाती हैं व देवी को अशुरूपीत विदाई देती हैं। इसके साथ ही वे आपस में भी सिंदूर

इस दिन यहां नीलकंठ पक्षी को देखना बहुत ही शुभ माना जाता है। अन्त में देवी प्रतिमाओं को विसर्जन के लिए ले जाया जाता है। मूर्ति विसर्जन यात्रा बड़ी दर्शनीय होती है।

कश्मीर के अल्पसंख्यक हिन्दू नवरात्रि के पर्व को श्रद्धा से मनाते हैं। परिवार के सारे वयस्क सदस्य नौ दिनों तक उपवास करते हैं। अत्यंत पुरानी परम्परा के अनुसार नौ दिनों तक लोग माता खीर भवानी के दर्शन करने के लिए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि

आशिवन शुक्रल दशमी को तारा उदय होने के समय विजय नामक मुहूर्त होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। इसलिए भी इसे विजयादशमी कहते हैं। तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक में दशहरा नौ दिनों तक चलता है जिसमें तीन देवियां लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा करते हैं। पहले तीन दिन धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी का पूजन होता है। अगले तीन दिन कला और विद्या की देवी सरस्वती की अर्चना की जाती है और अंतिम दिन देवी शक्ति की देवी दुर्गा की स्तुति की जाती है। पूजन स्थल को अच्छी तरह फूलों और दीपकों से सजाया जाता है। लोग एक दूसरे को मिठाइयाँ ब कपड़े देते हैं। यहां दशहरा बच्चों के लिए शिक्षा या कला संबंधी नया कार्य सीखने के लिए शुभ समय

# दशहरा शक्ति की साधना, कर्म एवं नवसृजन का पर्व

-ललित गर्ग-

भारतात्य त्याहार एवं मल जहा सस्कृत के अभिन्न अंग हैं वहीं प्रेरणाओं से भी जुड़े हैं। एक ऐसा ही अनूठा पर्व है दशहरा। भारत के लगभग सभी भागों में दशहरे का पर्व एक महान् उत्सव के रूप में मनाया जाता है, जिसे विजयदशमी भी कहा जाता है। यह पर्व बुराइयों से संघर्ष का प्रतीक पर्व है, यह पर्व देश की सांस्कृतिक चेतना एवं राष्ट्रीयता को नवऊर्जा देने का भी पर्व है। आज भी अंधेरों से संघर्ष करने के लिये इस प्रेरक एवं प्रेरणादायी पर्व की संस्कृति को जीवंत बनाने की जरूरत है। बहुत कठिन है यह बुराइयों से संघर्ष करने का सफर। बहुत कठिन है तेजस्विता की यह साधना। बहुत जटिल है स्व-अस्तित्व एवं स्व-पहचान को ऊंच शिखर देना। आखिर कैसे संघर्ष करें घर में छिपी बुराइयों से, जब हर घर आंगण में रावण-ही-रावण पैदा हो रहे हो, चाहे भृष्टाचार के रूप में हो, चाहे राजनीतिक अपराधीकरण के रूप में, चाहे साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाने वालों के रूप में हो, चाहे राष्ट्र को तोड़ने वाले आतंकवाद के रूप में हो, चाहे शिक्षा, चिकित्सा एवं न्याय को व्यापार बनाने वालों के रूप में। यह उत्सव प्रतिवर्ष मनाते हुए जहां शक्ति की कामना की जाती है, वहीं राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों की ओर ध्यान खींचा जाता है। इससे नई प्रेरणा, नई ताजगी, नई शक्ति एवं नई दिशाएं मिलती है।

दशहरा भारत का ह्याराष्ट्रीय त्योहार है। रामलीला में जगह-जगह रावण वध का प्रदर्शन होता है। क्षत्रियों के यहाँ शस्त्र की पूजा होती है। ब्रज के मन्दिरों में इस दिन विशेष दर्शन होते हैं। इस दिन नीलकंठ का दर्शन बहुत शुभ माना जाता है। यह त्योहार क्षत्रियों का माना जाता है। इसमें अपराजित देवी की पूजा होती है। यह पूजन भी सर्वसुख देने वाला है। दशहरा या विजयादशमी नवरात्रि के बाद दसवें दिन मनाया जाता है। भगवान् श्रीराम शक्ति की देवी मां दुर्गा के भक्त थे, उन्होंने युद्ध के दौरान पहले नौ दिनों



मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सदप्रेरणा प्रदान करता है। आज दशहरा का पर्व मनाते हुए सबसे बड़ी जरूरत भीतर के रावण को जलाने की है। क्योंकि ईमानदार प्रयत्नों का सफर कैसे बढ़े अगे जब शुरूआत में ही लगें लगे कि जो काम मैं अब तक नहीं कर सका, भला दूसरों को भी हम कैसे करने दें? कितना बौना चिन्तन है आदमी के मन का कि मैं तो बुरा हूँ ही पर दूसरा भी कोई अच्छा न बने। इस बौने चिन्तन के रावण को जलाना जरूरी है।

दशहरे का सांस्कृतिक पहलू भी है। यह देश की सांस्कृतिक एकता और अखण्डता को जोड़ने का पर्व भी है। इस वर्ष का विजयादशमी पर्व इसलिये विशेष है, क्योंकि इस पर्व की सकारात्मक क्रांतिकारी ऊर्जा से न केवल राष्ट्र में सक्रिय नकारात्मक एवं अराष्ट्रीय ताकतों को सख्त संदेश दिया जाना है बल्कि पड़ोसी पाकिस्तान-चीन आदि देशों की कुचेष्ठाओं के लिये ललकारा एवं सावधान भी किया जाना है। आजादी के अमृत काल में राष्ट्र को शताब्दी वर्ष के लिये सशक्त किया जाना है। मूलभूत आस्थाओं एवं राष्ट्रीयता के दृढ़ीकरण के साथ देश में जो नई चेतना आई है, वह एक शक्तिशाली नेतृत्व का जीवंत साक्ष्य है। राष्ट्रीयता, स्व-पहचान, स्वदेशी-भावना, हिन्दू-संस्कृति के ऊर्जा के अक्षय स्रोतों की खोज में जो प्रयत्न किया

जा रहा है, वह अभूतपूर्व है। जन-आकांक्षा के अनुरूप राष्ट्र को जिस युगीन परिवेश में प्रस्तुति दी जा रही है, वह असाधारण है।

दशहरा शक्ति की साधना, कर्म, नवसृजन एवं पूजा का भी पर्व है। पिछले आठ दशकों में लगातार हिन्दू-संस्कृति को कमज़ोर करने की राजनीतिक चालें होती रही हैं। दरअसल हिन्दू धर्म नहीं, विचार है, संस्कृति है। हिन्दू राष्ट्र होने का अर्थ धर्म से न होकर हिन्दू संस्कृति के सर्वग्राही भाव से है। हिन्दू संस्कृति उदारता का अन्तर्निहित शख्नाद है व्यांक पूरे विश्व में यह अकेली संस्कृति है जो बहुविचारवाद यानी सभी धर्म, विचार एवं संस्कृतियों को स्वयं में समेटे हैं। चार्वाक जैसे भौतिकवादी विचारक को भी इस देश ने ऋषि को उपाधि दी गई जिसने कहा था कि ह्यान्तरंग कृत्व धृतं पीवेतह अर्थात् जो भी है वह आज है, कल किसने देखा है इसलिए आज को भरपूर ढंग से जीना चाहिए और कर्जा लेकर भी अगर यह करना पड़े तो करना चाहिए। इसके साथ ही हमारे ऋषियों ने हमें यह उपदेश भी दिया कि ह्यसत्यं बूर्यात न बूर्यात सत्यं अप्रियवं अर्थात् सच बोलो मगर कड़वा सच मत बोलो।

हिन्दू संस्कृति की यही महानता और विशेषता रही है कि प्रिय सत्य की वकालत तो करती है मगर इसके कटु होने पर निषेध करने को भी कहती है।

यह हिन्दू संस्कृति अहिंसा की संस्कृति है पर जरूरत पड़ने पर शास्त्र उठाकर स्व-रक्षा की बात भी कहती है। हिन्दू शब्द से ही स्वराष्ट्र का बोध होता है जो कि हिन्दू संस्कृति के वृहद स्वरूप का ही सौपान है। इसी विचारधारा को बल देने का सशक्त माध्यम है विजयादशमी पर्व। मराठा रत शिवाजी ने भी और जेनेब के विरुद्ध इसी दिन प्रस्थान करके हिन्दू धर्म का रक्षण किया था। भारतीय इतिहास में अनेक उदाहरण हैं जब हिन्दू राजा इस दिन विजय-प्रस्थान करते थे। ऐसा माना गया है कि शत्रु पर विजय पाने के लिए इसी समय प्रस्थान करना चाहिए। इस दिन श्रवण नक्षत्र का योग और भी अधिक शुभ माना गया है। स्कंदपुराण के अनुसार गंगा दशहरे के दिन व्यक्ति को किसी भी पवित्र नदी पर जाकर स्नान, ध्यान तथा दान करना चाहिए। इससे वह अपने सभी पापों से मुक्ति पाता है।

इस गंगा दशहरे पर स्वयं को  
पापों को धोने के साथ-साथ जरूरत  
जन-जन के मनों को भी मांजने की है।  
जरूरत उन अंधेरी गलियों को बुहारने  
की है  
‘ताकि बाद में आने वाली पीढ़ी कभी  
अपने लक्ष्य से न भटक जाये। जरूरत है  
सत्य की तलाश शुरू करने की जहां न  
तर्क हो, न सन्देह हो, न जलदबाजी हो,  
न ऊहापोह हो, न स्वार्थों का सौदा हो  
और न दिमागी बैशाखियों का सहारा हो।  
वहां हम स्वयं सत्य खोजें। मनुष्य मनुष्य  
को जोड़े।

दशहरा एक चुनौती बनना चाहिए उन  
लोगों के लिये जो अकर्मण्य, आलसी,  
निठल्ले, हताश, सत्वहीन बनकर सिर्फ  
सफलता की ऊँचाइयों के सपने देखते हैं  
पर अपनी दुर्बलताओं को मिटाकर नयी  
जीवनशैली की शुरूआत का संकल्प  
नहीं स्वीकारते। दशहरे का उत्सव धर्म  
की रक्षा, शक्ति का प्रदर्शन और शक्ति का  
समन्वय का प्रतीक है। इसके अलावा  
दशहरा नकारात्मक शक्तियों के ऊपर  
सकारात्मक शक्तियों के जीत का प्रतीक  
है।

# शक्ति-पूजा का पर्व है दशहरा

# **हरियाणा की जीत के बाद फिर लौटा नरेंद्र मोदी का पुराना अंदाज**

- क खाद्य  
उष्णती हर्द

उम्ररा हुर राजनीतिक बहानों एक व्यापक प्रवृत्ति को दर्शाती है: क्षेत्रीय जीत का राष्ट्रीय स्तर पर गहरा असर हो सकता है। जैसे-जैसे भाजपा अपनी सफलता का आनंद ले रही है, कांग्रेस और उसके सहयोगियों के लिए निहितार्थ स्पष्ट होते जा रहे हैं, जो समकालीन राजनीति की लगातार बदलती गतिशीलता को उजागर कर रहे हैं। प्रत्येक चुनाव चक्र जटिलता की परतें जोड़ता है। मंगलवार की रात मोदीजी ने अपने पुराने अंदाज में ही भाषण दिया। हरियाणा में भाजपा की सफलता के बाद प्रधानमंत्री के विजय भाषण से ऐसा लगा जैसे उन्होंने राष्ट्रीय चुनाव में जीत हासिल कर ली हो। उन्होंने वह सब कुछ कहा जो उन्होंने 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद कहने की योजना बनाई थी, लेकिन अपनी पार्टी के लिए कम जनादेश के कारण ऐसा नहीं कर सके थे। मंगलवार की रात का संबोधन राज्य विधानसभा चुनाव के दायरे से कहीं आगे निकल गया। हरियाणा में भाजपा की अप्रत्याशित सफलता ने उनमें नई एड़ेना लाईन की खुराक भर दी। इस संबोधन में मोदी ने अविश्वास से भरा और एक ऐसे नेता की छवि पेश की जो अपने आख्यान को फिर से हासिल करने के लिए उत्सुक था। बॉडी लैंचेज ने नये जोश की कहानी बयां की, जो 2024 के चुनाव के बाद के मोदी के बिल्कुल विपरीत था, जो हिचकिचाते और सतर्क दिखाई दिए थे। उस समय, उनके भाषण गठबंधन की गतिशीलता और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के संदर्भों से भरे हुए थे,

दूसरी ओर कांग्रेस-एनसीपी (शरद पवार)-शिव सेना (उद्धव) गठबंधन भाजपा के लिए एक गंभीर खतरा पैदा कर सकता है। मुंबई में जीत राहुल गांधी के लिए बहुत जरूरी गति प्रदान करेगी, जिनकी पार्टी घटते मनोबल से ज़बू रही है। मोदी के लिए, हरियाणा के विराणम न के बल उनके आत्मविश्वास को फिर से जीवंत करते हैं, बल्कि उन्हें आगे आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार होने के साथ-साथ कहानी को अनुकूल रूप से तैयार करने का अवसर भी देते हैं। मोदीजी के भाषण में विकास और शासन के विषयों पर जोर दिया गया। उन्होंने कांग्रेस और उसके तरीकों पर सीधा हमला किया और बताया कि कैसे पार्टी समकालीन राजनीतिक इतिहास में लंबे समय तक कभी भी दूसरा कार्यकाल नहीं जीत पाई है। उन्होंने कांग्रेस के घांघों पर नमक छिड़कते हुए उन्हें याद दिलाया कि भाजपा को लगातार तीसरे कार्यकाल के लिए हरियाणा में सत्ता में वापस लाया जा रहा है और इस सफलता का श्रेय उन्होंने जनता के लिए सरकार के कल्पणाकारी कार्यक्रमों को दिया।

न रह पर नया, जिससे दोषपूर्ण मुद्दों को संबोधित करने के लिए पार्टी की प्रतिबद्धता को बल मिला। यह जमीनी स्तर का जुड़ाव महत्वपूर्ण है क्योंकि भाजपा कार्रवाई और परिणामों की पार्टी के रूप में अपना ब्रांड बनाना जारी रखती है। निस्संदेह, बदलती प्रतिस्पर्धा के खिलाफ अपनी चुनावी गति को बनाये रखने में भाजपा के सामने एक बड़ी चुनौती है। दूसरी ओर कांग्रेस-एनसीपी (शरद पवार)-शिवसेना (ठाकरे) गठबंधन के सामने एक बड़ा काम है: उन्हें एक आकर्षक प्रति-कथा को अपनाना और प्रस्तुत करना होगा। राहुल गांधी का नेतृत्व जांच के दायरे में होगा, और पार्टी को वर्तमान प्रशासन की नीतियों से निराश मतदाताओं को जोड़ना होगा। क्षेत्रीय गतिशीलता भी महत्वपूर्ण है। हरियाणा में परिणाम आसन राज्यों में भाजपा के आधार को और मजबूत करेगा, जिससे गठबंधन को बढ़ावा मिलेगा जो एक विखंडित विपक्ष के खिलाफ अपनी स्थिति को मजबूत करेगा। इसलिए महाराष्ट्र चुनाव भाजपा के लचीलेपन और कांग्रेस की अनुकूलन क्षमता दोनों के लिए एक अग्रिम परीक्षा होगी।

मोदी का विजय भाषण एक अधिक मुख्य अभियान शैली की ओर वापसी के संकेत देता है। प्रधानमंत्री अपनी बयानबाजी को और तेज कर सकते हैं क्योंकि उनका लक्ष्य सत्ता को मजबूत करना और भाजपा के भीतर और विपक्ष दोनों से चुनौतियों का सामना करना है। यह 2024 के लोकसभा चुनावों में असफलता के बाद से अपनाये गये

जो एक ऐसे नेता को दर्शाते थे जो अपने सहयोगियों द्वारा असुरक्षित और विवश महसूस करता था। लेकिन मंगलवार की रात की बात अलग थी। उन्होंने भाजपा की उपलब्धियों और विजय के बारे में जोश से बात की और प्रभावी रूप से माहौल को अपने पक्ष में मोड़ दिया। एक ऐसे समय में जब लग रहा था कि राहुल गांधी की कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्ष गति पकड़ रहा है। शुरूआती चुनावी गणनाओं से कांग्रेस के लिए संभावित भूखलन का सकेत मिल रहा था, जिससे उसके समर्थकों में आशावाद जग भाजपा इस बात से अच्छी तरह वाकिफ है कि कांग्रेस में कमजोरी का कोई भी सकेत उसकी अपनी गति में फिर से उछल ला सकता है। यह स्पष्ट है कि पार्टी आने वाले चुनावों में स्थिरता और प्रगति के चैपियन के रूप में खुद को स्थापित करेगी, एक ऐसा कथानक जो महाराष्ट्र में विशेष रूप से अच्छी तरह से प्रतिध्वनित होता है, जहां विकास संबंधी मुद्दे सर्वोंपरि हैं। हरियाणा में, भाजपा ने स्थानीय चिंताओं और मोदीजी की राष्ट्रीय अपील दोनों का लाभ उठाया। बनियादी ढांचे, महिलाओं की सतर्क दृष्टिकोण से अलग है, जिसमें उन्होंने गठबंधन बनाने और आम सहमति पर ध्यान केंद्रित किया है। हरियाणा में मोदी की जीत ने भाजपा में नई ऊर्जा भर दी है और पार्टी अपने राष्ट्रीय अभियान के लिए इस सफलता को लॉन्चिंगपैड के रूप में भुगाने के लिए उत्सुक है। प्रधानमंत्री की अपनी पार्टी को एकजुट करने और एक स्पष्ट, सम्मोहक दृष्टिकोण व्यक्त करने की क्षमता आने वाले महीनों में महत्वपूर्ण होगी। राजनीतिक विश्वेषक निस्संदेह हरियाणा के परिणामों के निहितार्थों



